

भारतीय भूमि, वन और कृषि की अवधारणा

भारत में भूमि, वन और कृषि की अवधारणा प्राचीन काल से चली आ रही है। यह न केवल आर्थिक और सामाजिक जीवन का आधार रही है, बल्कि सांस्कृतिक और आध्यात्मिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण रही है। भारतीय सभ्यता में भूमि को "माता" के रूप में देखा गया, वनों को "आरोग्य और आजीविका का स्रोत" माना गया, और कृषि को "अन्नदाता" के रूप में प्रतिष्ठित किया गया।

1. भारतीय भूमि की अवधारणा

(क) प्राचीन काल में भूमि का महत्व

- वैदिक काल में भूमि को "गौ" (गाय) और "माता" की तरह पवित्र माना गया।
- भूमि व्यक्तिगत संपत्ति से अधिक समुदाय और राजा की धरोहर मानी जाती थी।
- "ऋग्वेद" और "अर्थशास्त्र" में भूमि व्यवस्था और कर-प्रणाली का उल्लेख मिलता है।

(ख) भूमि स्वामित्व की परंपरा

- सामूहिक स्वामित्व – गाँवों में भूमि पूरे समुदाय की संपत्ति होती थी।
- राजकीय स्वामित्व – कई शासकों ने भूमि को राज्य की संपत्ति माना और किसानों को पट्टे पर दिया।
- व्यक्तिगत स्वामित्व – मध्यकाल और ब्रिटिश काल में ज़मींदारी प्रथा के तहत भूमि स्वामित्व व्यक्तिगत अधिकारों में बदल गई।

(ग) आधुनिक संदर्भ में भूमि

- भारतीय संविधान में भूमि राज्यों का विषय है, और इसकी सुरक्षा और सुधार के लिए कई कानून बनाए गए हैं।
 - भूमि सुधार कार्यक्रमों के तहत सीलिंग, भू-अधिग्रहण और भूमि पुनर्वितरण जैसे कदम उठाए गए।
-

2. भारतीय वन की अवधारणा

(क) पारंपरिक दृष्टिकोण

- भारत में वनों को "देवता" के रूप में पूजा जाता था।
- "रामायण" और "महाभारत" में वनवास का वर्णन है, जो यह दर्शाता है कि वन भारतीय जीवन का अभिन्न अंग रहे हैं।
- आयुर्वेद में वनों से प्राप्त औषधीय पौधों का विशेष उल्लेख मिलता है।

(ख) औपनिवेशिक काल में वन नीति

- ब्रिटिश शासन ने वनों को राजस्व का स्रोत माना और "भारतीय वन अधिनियम, 1865" और "1878" लागू किए।
- वनों के दोहन से आदिवासी समुदायों के परंपरागत अधिकार समाप्त हो गए।

(ग) स्वतंत्र भारत में वन संरक्षण

- "भारतीय वन नीति, 1952" – वनों को राष्ट्रीय संपत्ति घोषित किया गया।
 - "वन संरक्षण अधिनियम, 1980" – अंधाधुंध वनों की कटाई रोकने के लिए कानून बनाए गए।
 - संविधान के अनुच्छेद 48A और 51A(g) के तहत वनों और पर्यावरण की रक्षा को नागरिकों का कर्तव्य बनाया गया।
-

3. भारतीय कृषि की अवधारणा

(क) कृषि का पारंपरिक स्वरूप

- कृषि को "अन्नदाता" और "जीवन का आधार" माना गया।
- "कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था" – वैदिक काल से ही कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ रही है।